

अध्याय - 9

मुद्राराक्षस का जीवन और साहित्य

प्रकरण - 1

मुद्राराक्षस का जीवन और साहित्य

व्यक्तित्व :-

मुद्राराक्षस का जन्म 21 जून 1931 ईसवी में बेहरा गाँव, लखनऊ में हुआ। आपका उपनाम "मुद्राराक्षस" है। आपका असली नाम "सुभाषचंद्र आर्य" है। लेकिन साहित्य में आप मुद्राराक्षस के नाम से ही जाने जाते हैं। शिवचरण आपके पिता हैं जो वयोवृद्ध गायक, अभिनेता और निर्देशक हैं। उनसे आपने रंगमंच की प्रेरणा ली। आपने एम.ए. की उपाधि प्राप्त की। आपने पत्रकारिता से जीवन का प्रारंभ किया। आपने मजदूर आंदोलन में भी हिस्सा लिया। आपपर मार्क्सवाद का गहरा प्रभाव दिखाई देता है।

मुद्राराक्षसजी ने अनेक नौकरियों की और विविध प्रकार की पत्रकारिताओं में अपने लेखन और संपादन का कार्य भी किया। आपने "कलकत्ता" के "ज्ञानोदय", "अणुव्रत", अंग्रेजी साप्ताहिक "जीरो", पहिला बुलेटिन तथा "बेहतर" का संपादन किया। इ.स.1963 में आपके आल इंडिया रेडिओ में प्रवेश किया। इ.स.1968 में आप अखिल भारतीय आकाशवाणी कर्मचारी महासंघ के अध्यक्ष बने। इ.स.1976 में आपने आकाशवाणी से संपादक (नाटक) पद से इस्तीफा दिया। आपने अच्छे अभिनेता और निर्देशक के रूप में हिंदी साहित्य में अपना स्थान बनाया है। साहित्य जीवन में आपकी पत्नी (नायिका इंदिरा) से आपको काफी सहाय्यता, प्रेम प्राप्त हुआ। आप और आपकी पत्नी ने मिलकर मंच-तकनीशियन के बिना इ.स.1966 में "मरजीवा" नाटक प्रस्तुत किया।

जीवन :-

मुद्राराक्षस का जीवन अध्ययनशील रहा है। प्राचीन संस्कृत साहित्य से आधुनिक साहित्य तक का ज्ञान अपने बलबूते पर प्राप्त किया। देश की जनता अनेक दिनों से आर्थिक,

सामाजिक शोषण की चक्की में पीसती आयी है। इसका एहसास होने से आपने उनके प्रति प्रेम और सहानुभूति दिखाई है। और अपने साहित्य में गरीब जनता के शोषण का वर्णन किया है।

मुद्राराक्षसजी ने जो नाटक लिखे हैं उनमें अधिक अंग्रेजी का प्रयोग होने के कारण इनके नाटक सामान्य जनता की समझ में नहीं आते ऐसी आलोचना की जाती है। लेकिन अपने नाटकों में सामान्य जनता, गरीब मनुष्य की समस्या, परवशता को अत्यंत तन्मयता से चित्रित करने का प्रयत्न किया है। उच्च वर्ग के लोग सामान्य जनता पर अन्याय-अत्याचार करते नजर आते हैं। ऐसे उच्च वर्गके लोगों का जो समस्याओं से परिचित नहीं है उन्हें इस बात का पता तक नहीं है कि वे किसी पर जुल्म कर रहे हैं, कम से कम मुद्राराक्षसजी के नाटकों के जरीए उन्हें इस बात का एहसास तो हो ही जाता है। इसके आधार पर हम कह सकते हैं 'मुद्राराक्षस के नाटक सामान्य जनता की समझ के लिए कठिन क्यों न हो सामान्य जनता को लेकर प्रस्तुत किये हैं।

डॉ. गिरीश रस्तोगी के अनुसार "मुद्राराक्षस ने भारतीय त्रासदी की ब्यूरीक्रेसी यौन कृतियों को, सामाजिक-राजनैतिक, भ्रष्टाचार को नये तलाश, नये शिल्प, सीधी चोट करती भाषा और नयी संवेदना के साथ अपने नाटकों में प्रस्तुत किया है।"²

मुद्राराक्षस का साहित्य :-

उपन्यास :- (1) मैडेलीन, (2) अचल : एक मनस्थिति, (3) भगोडा, (4) हम सब मंसाराम
(5) शोक संवाद, (6) मेरा नाम तेरा नाम, (7) शांतिभंग आदि.

नाटक :- (1) मरजीवा, (2) योर्स फेथफुली, (3) तिलचिट्टा, (4) तेन्दुआ, (5) गुफायें,
(6) सन्तोला, (7) आला अफसर, (8) डाकू, (9) मालविकाग्निमित्र और हम।

साहित्यिक आलोचना :- (1) साहित्य समीक्षा, परिभाषाएँ और समस्याएँ।

कहानी संग्रह :- शब्द दंश।

रेडियो नाटक :- (1) काला आदमी, (2) उसका अजनबी, (3) लाइहरोबा, (4) सन्तोला,

- (5) उसकी जुराब, (6) काले सूरज की शव यात्रा, (7) विद्रुप और,
(8) अनुत्तरीत प्रश्न ।

असंगत नाट्य परम्परा की शुरूवात भुवनेश्वर प्रसाद और कुमार अग्रवाल से मानी जाती है, जिन्होंने असंगत नाट्य परंपरा को जन्म दिया। उसका पोषण हिन्दी नाट्य क्षेत्र में मुद्राराक्षसजी ने किया है। उन्होंने कई छोटी मोटी किताबें लिखी हैं किन्तु नाटकों के कारण ही उन्हें अधिक सफलता प्राप्त हुई है। आपके नाटकों में हिंसा, सेक्स, सत्ता के प्रति आक्रोश, उत्पीड़न, नजर आते हैं ये आपके प्रिय विषय रहे हैं। आपपर पाश्चात्य नाट्य परंपरा का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। आपके नाटकों में मानव जीवन की विसंगति नजर आती है। आपके केवल चार ही नाटक असंगत हैं -

1. मरजीवा ।
2. योर्स फेथफुली ।
3. तिलचिट्टा ।
4. तेन्दुआ ।

गौण असंगत नाटकों में -

1. सन्तोला और
2. गुफाएँ ।³

सन्तोला :-

"सन्तोला" : एक छिपकली नामक रेडियो नाटक का मंचीय रूप सन्तोला है। यह रेडियो नाटक 1980 में रंगमंचीय नाटक के रूप में प्रकाशित हुआ। यह नाटक दो अंकों में विभाजित है। नाटक में पहाड़ी इलाका, भुवन के मकान का कमरा, और अंधेरी गुफा के तीन दृश्य-बंधों पर आधारित है। भुवन और सन्तोलाने पति-पत्नी होकर एक दूसरे को इतना जान लिया है कि परस्पर अजनबी हो गये हैं। "भुवन" को पति के रूप में स्वीकार करना सन्तोला को मान्य नहीं, वह राजी नहीं होती।

डॉ. दशरथ ओझा के अनुसार वह संतोला जीवन के अन्धकार में ऐसे प्रकाश की खोज में है जो सुखमयी सभ्यता का केवल संकेत ही नहीं निर्माण में पथ मिल सके। वह आज के प्रचलित जीवन मूल्यों के खंडहर पर ही नई सभ्यता का निर्माण करना चाहती है।⁴

डॉ. जयभगवान गुप्त के अनुसार "सन्तोला" में मुद्राराक्षसजी ने ऐसे तीन व्यक्तियों की मानसिकता का चित्रण किया है जो एक पहाड़ी इलाके में उत्खन्न के लिये जाते हैं। और भूस्सखलन के कारण एक गुफा में बंद हो जाते हैं। धीरे-धीरे खाना-पीना समाप्त हो जाता है और इतिहास भी ठहर जाता है। वे धीरे-धीरे मरते। इससे यह स्पष्ट होता है कि मुद्राराक्षसजी ने मानव मन के अंतर्मन की वासनाओं के हिंसक पशु का चित्रण बड़ी सफलता से चित्रित किया है।⁵

गुफायें :-

गुफायें 1979 में प्रकाशित नाटक असंगत नाटक के रूप में सामने आता है।⁶ गुफायें के बारे में मुद्राराक्षसजी ने स्पष्ट कहा है कि गुफायें के लेखन के पीछे नाटकीय मजबूरी या दबाव न होकर मेरे अपने मंचकर्मी का ही दबाव था।

डॉ. गिरीश रस्तोगी ने स्पष्ट कहा है - "गुफायें पूर्व नाटकों की तुलना में ज्यादा प्रभावशाली नाटक है। इसकी मुख्य जमीन थी भय, हिंसा, क्रूरता, घृणा, वितृष्णा, मानवीय शून्यता, तेजवलय की है और उनसे पैदा हुई असामान्यता कुण्ठा आदि है। नया कुछ भी नहीं है। लेकिन पूरे नाटक की संरचना में उतनी एकरसता ठंडापन नहीं है और न ही प्रतीकों, संकेतों का काठ ठहरपन। प्रयोग की प्रवृत्ति यहाँ भी है और यह प्रयोग रचना पर हावी न होकर अभिनय रंगमंच और प्रस्तुति की सम्भावनाओं को सांकेतिक सूक्ष्म स्तर पर खोलता है।"⁷

नाटक द्विपात्रीय प्रयोगात्मक रचना है।⁸ इसमें पिता, माँ, आया, नौकरी, ड्रायव्हर, इ. पात्र हैं। लेकिन इन सारे पात्रों की भूमिकाएँ केवल दो ही पात्र करते हैं। ये दो पात्र अनन्त और लिली हैं। लिली का पिता उद्योगपति वर्ग का और अनन्त अपहर्ता वर्ग का प्रतिनिधित्व करता

है। अनन्त बदमाशों के दल का सदस्य है। लिली एक उद्योगपति की बेटी है। वह अकेली है। उनका परिवार एक दूसरे के विरोध में खड़ा है। लिली अपने मकान को एक गुफा, अंधेरे से भरा मानती है। उसे जब अनन्त अपहरण (अगवाकर) कर लाता है, तब वहाँ भी उसे अंधेरा ही नजर आता है। लेकिन धीरे-धीरे अनन्त का खूंखारपन समाप्त हो जाता है। यहाँ नाटककार ने खौफ और खूंखारपन के द्वारा सभ्य समाज की परतों में व्याप्त अकेलेपन की त्रासदी को उभारने का प्रयत्न है।

पात्रों के संवादों में अन्तर्विरोध नजर आता है। अनन्त को जब खूंखार होना चाहिए था, तब वह कहता है - "अब तो मुझे तुम पर रहम आने लगा है", जब लिली रहम के लिए अनुनय-विनय करती है, तो वह उसकी उंगली काट डालता है। एक अवसर पर वह उससे कहता है, "चली जा नहीं तो मैं जबरदस्ती कर बैठूँगा।" और दूसरे ही क्षण "तू मुझसे ब्याह करेगी" का प्रस्ताव रखता है। "तुम जबरदस्ती करोगे तो क्या मैं रोक पाऊँगी? क्यों नहीं की तुमने जबरदस्ती" लिली के ये संवाद जबरदस्ती की जाय इसी संकेत को उभारते हैं।

डॉ. दशरथ ओझा ने कहा है - "इस नाटक में कालेधन के संचयन से एक ओर आधुनिक उद्योगपति की पारिवारिक अशांति, जीवन की विसंगति एवं आंतरिक द्वंद्व दिखाया गया है। और दूसरी ओर न्यूनतम प्रयास के द्वारा शीघ्रतिशीघ्र सम्पत्तिशाली बनने की कामना से उद्वेलित एक किशोरी अपहर्ता उचक्के चोर का समाज से संघर्ष प्रस्तुत किया गया है।"⁹

लेखक ने एक ही परिस्थिति को, नियति को विभिन्न स्तरों पर दिखाना चाहा है जो पिता और माँ के बीच में हैं, वही विडम्बना अनन्त और मिलन के बीच की है, वही भूख है, वही अतृप्ति, वही "गुडिया जैसी नन्ही मुलायम लिली" वही अनन्त के मन में अपने जंगली हाथ से छू लेने में उसके टूट जाने का डर और वहीं लाल का तपन, कराह, टूटन और विक्षिप्तता है। मुद्राराक्षसजी किसी विशेष स्थिति का विशेष प्रतिक संकेतों के द्वारा बार-बार दोहराते जाते हैं।

आला अफसर :-

मुद्राराक्षसजी का आला अफसर नौटंकी शैली में लिखा नाटक है, जो गोगोद के रूसी नाटक "इन्स्पेक्टर जनरल" का हिन्दी का नाट्य रूपांतर है।¹⁰ यह चित्तपुर नामक कस्बे में दिल्ली का एक सरकारी आला अफसर जाँच पडताल करने आता है। उसके स्वागत के लिए चेअरमन, हेडमास्टर, पोस्टमास्टर आते हैं। वह पोपटलाल नामक हॉटेल में ठहरता है। किन्तु एक सामान्य क्लर्क को अफसर समझकर उन्हें भेट चढाते हैं। भेंट में रूपये पैसे के अतिरिक्त लडकी तक को हॉटेल में भेजते हैं, ताकि अधिकारी अपनी काली करतूतों को जनता के सामने न लाये, और कस्बे की नगर पालिका में रूपये पैसे के घोटाले पर पर्दा पड़ जाये।¹¹

नाटककारने अफसरवादी और राजनीतिक स्थिति पर तीखा व्यंग्य किया है। आला अफसर नौटंकी शैली में लिखे नाटक में नाटकीयता, उन्मुक्तता है, मंचन और अभिनय तथा गायकी की उत्तेजक लयात्मकता है। दर्शकों को "अनौपचारिक बना देने वाला गुण भी उसमें है।

नौटंकी का रंगमंच संगीतप्रधान है।¹² नौटंकी में छन्द, दोहा, चौबेला दौड़, बहरतवील, ठुमरी, भजन, कहरवा, झिंझोटी, कव्वाली, रसिया, बन्ना का प्रयोग किया जाता है। इनका प्रयोग आला अफसर में दिखाई देता है।¹³ यह नौटंकी की विशेषता होती है। इसमें मालिक और वार्षिक छंद का भी प्रयोग किया है। नौटंकी का अत्यंत आकर्षक छन्द है बहरतवील जिसका प्रयोग वाद-विवाद के लिए किया जाता है। इसकी सहायता द्वारा नाटक के घटना क्रम पर प्रकाश डाला जाता है। इसका गायन छोटी-मोटी तानों के साथ होता है।

बहरतवील : चेअरमनजी ने सुना एक दिन आनेवाला है, दिल्ली से हाकिम बडा। जाँच पडताल कस्बे की करने को वो छुपके यहाँ पर रहेगा। वो अफसर बडा।¹⁴

कोरस :

ढूँढों ढूँढों रे आफसर आला

जब से उसकी खबर है आई

हाय सबकी है शामत लाई
 आज किससे पडा है पाला
 ढूँढो ढूँढो रे अफसर आला ।
 आज तक लूटते थे जो हम को
 शेर बनकर डराते थे हम को
 हो गया उनका भी मूँह काला
 ढूँढो ढूँढो रे अफसर आला।¹⁵

कव्वाली :-

कलेजा थामकर सुन लो बडी है दास्तौं इनकी।
 निकलता काम हो इनका पिंदर मानेंगे खर को भी
 चुनाओं के दिनों में चले आएंगे सिर के बल ।
 करेंगे आपसे वादे मिलेंगे आपको कम्बल
 नहीं गद्दी मिली इनको हुई इनकी जुबों दुहरी।
 कलेजा थामकर सुन लो।
 सडक बेरोजगारों के पसीने से हुई गीली ।
 उतरते रात हरघर में सुलगती लकड़ियाँ गीली।
 सुलाकर अपने बच्चे देखती अन्धेर माँ जिनकी ।
 कलेजा थामकर सुन लो -
 गरीबों पर करें भाषण । उठाते हैं, कसम सबकी ।
 गरीबों का कलेजा तल के खा जाएँ ना कौपेजी ।
 लगा दा जोर का नारा निकल जाएगी जौं इनकी ।
 कलेजा थामकर सुन लो।"¹⁶

मरजीवा :-

असंगत नाटकों में मुद्राराक्षस का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। इ.स. 1960 में लिखे मरजीवा नाटक के कारण आप एक प्रयोगशील नाटककार के रूप में सामने आये। यह नाटक सामाजिक राजनीतिक जीवन में चारों तरफ फैले भ्रष्टाचार, बेईमानी का पर्दा फाश करता है। मरजीवा नाटक पति-पत्नी की करुण कहानी, हताश, मानसिक संघर्ष की कहानी है। मनुष्य अपनी इच्छा के अनुसार जीवन नहीं जी पाता और न ही मर सकता है।

यह पाँच अंकों वाला नाटक है।¹⁷ प्रथम तीन अंकों का स्थान भूमि का कमरा है। और अन्तिम दो का क्रमशः पुलिस स्टेशन और पार्क है। इस नाटक में पुलिस, अफसर, सिपाही, पत्रकार और मंत्री इ. पात्र हैं।¹⁸ आदर्श बेकार नवयुवक है। भूमि आदर्श की पत्नी है। जो बहुत सुंदर है। उस पर शिवराज गंधे अपनी जान न्योछावर करता है। वह उसे नौकरी के बहाने उसे अपने बंगले पर बुलाता है। आदर्श भूमि को गंधे के हाथ से बचाने का प्रयत्न करता है। वह भूमि और पिता को नींद की गोलियाँ देता है लेकिन वे बच जाते हैं।

गंधे को मंत्रीपद से बहिष्कृत किया जाता है। इसलिए वह अपने विरोधी दल के नेता पारस का नाम बदनाम करने के लिए वह आदर्श का इस्तेमाल करने का प्रयत्न करता है। आदर्श गंधे द्वारा बनाई गई योजना का विरोध करता है, तो उसके शरीर पर पेट्रोल छिड़ककर उसे जिन्दा जलाया दिया जाता है।

प्रस्तुत नाटक में पग-पग पर नैराश्य संत्रास कुण्ठा, अमानवीयता दिखाई पडती है।¹⁹ इसमें सब से बड़ी समस्या सेक्स की है। आदर्श अपनी नपुंसकता की स्पष्ट स्वीकृति वह अपनी पत्नी के पास व्यक्त करता है - "भूमि हमारा सबसे बड़ा अपराध तो यह है कि हमने कुछ नहीं किया एक छोटासा झूठ था ठीक तरह से नहीं बोल सके हम पर हमेशा नपुंसकता हावी रही है ।" इस नाटक के पात्रों के नाम प्रतीकात्मक शैली में रखे गये हैं।

डॉ. सत्यव्रती त्रिपाठी का मत है - "तेन्दुआ उच्च वर्ग के पाशाविक, संस्कारों और नैतिक स्खलन का प्रतीक है। आज के लोगों का जीवन क्यों न अच्छा हो या न हो फिर भी उसके जीवन में विसंगति के दर्शन होते हैं।"²⁹

तिलचिट्टा :-

तिलचिट्टा नाटक सेक्स को रूपायित करता है। प्रस्तुत नाटक में केशी और देव पति-पत्नी हैं। उनकी त्रासदी प्रमुख है। त्रासदी जो प्रारंभ से अंत तक मंच पर रहती है। बाकी सब पात्र प्रतीक, देशकाल, घटनाएँ सब सिर्फ उसकी वहाँ मौजूदगी को प्रामाणिकता देनेवाले दस्तावेज हैं।³⁰

बेडरूम में देव और केशी लेटे हैं, जो एक दूसरे से वार्तालाप कर रहे हैं।³¹ देव की पत्नी केशी नर्स का काम करती है। देव उसके चरित्र पर संदेह करता है। देव नपुंसक है। केशी के पेट में जो बच्चा है वह डॉक्टर का है।

देव और केशी अपनी अपनी जिंदगी कुण्ठाओं में घुट रही हैं। वे जीवन के प्रति निराश हैं। देव स्वप्न में देखता है वह केशी के साथ एक घने जंगल में भटक गया है जहाँ कोई केशी की साड़ी और ब्लाऊज खींच रहा है। और आखिर में केशी गायब भी हो जाती है। स्वप्न में वह देखता है उसका गला दो पिण्डारियों द्वारा घोटने का प्रयत्न किया है। वह स्वप्न में देखता है पिल्ले सदृश्य बच्चा पैदा हुआ है, और उस बच्चे को देव और केशी मिलकर मार डालते हैं।

यहाँ तिलचिट्टा आतंकवादी व्यक्ति का प्रतीक है। यहाँ दोनों ही स्वप्न दृश्य मनोवैज्ञानिक ग्रन्थियों और जटिलताओं से संबद्ध है। यह नाटक यौन जीवन की अतृप्ति को ही उजागर करता है। प्रस्तुत नाटक अनेक सम्भ्रम निर्माण करता है। केशी का कुत्ते के पिल्ले सदृश्य बच्चा सम्भ्रम निर्माण करता है कि कहीं केशी के देव के मरे कुत्ते के साथ तो संबंध नहीं थे? इसमें पशुकामुकता, अकामुकता नजर आती है।

उपर्युक्त संवादों के आधार पर यह कहा जाता है कि आज के अफसर अपने अधिकार का उपयोग अपनी स्वार्थाधिता, अपनी यौन इच्छा को परा करने के लिए करते हैं। और दूसरों पर अपना दबाव डालकर अमानवीयता के साथ पेश आते हैं। अपने अधिकार के बल पर वे दूसरों को उंगली पर नचाते हैं। वर्तमान जगत की राजनीतिक भ्रष्टाचारिता, अधिकारियों की कामुकता, नीरसता को प्रस्तुत (अंकित) करना नाटककार का उद्देश्य है।

डॉ. गिरीश रस्तोगी के अनुसार - "यह नाटक अपने में तेज, मार्मिक और सहज है और अपने शिल्प में नया होते हुए भी कोरा चमत्कार-वादी नहीं है।"²⁷

तेन्दुआ :-

तेन्दुआ नाटक मानव की पाशविक संस्कार समूह का प्रतीक है।²⁸ प्रस्तुत नाटक में तीन अंक हैं। इसमें नाटककार ने उच्च वर्ग के द्वारा निम्न वर्ग के शोषण को उजागर किया है। इसमें भूषणराय, पुलिस कमिश्नर है, मिसेस मदान और मिसेस रेनु राय उच्च वर्ग की महिलाएँ हैं। दोनों महिलाएँ काम वासना का पूरी तरह आनंद प्राप्त करने में कभी महसूस करती हैं। भूषणराय सच्चे मुजरिम को पकड़ने में असमर्थ होता है तो वह एक गरीब माली को पकड़कर हवालात में बंद करने के बजाय अपनी पत्नी को सौंप देता है। मिसेस मदान व मिसेस रेनु राय अतृप्त कामवासना की पूर्ति के लिए माली का इस्तेमाल करती हैं। वे गरीब माली को यातनाएँ देती हैं। उन्हें माली के चिखने में संगीत का अनुभव मिलता है।

उच्च वर्ग अपने सुख के लिए दूसरों को काट देता है, वह दूसरों के दुःखों की फिक्र नहीं करता है। वह अपनी मनमानी के अनुसार दूसरों को नचाते हैं। दूसरों के कष्टों पर अपनी सुखी जिन्दगी बिताते हैं। रेनु राय और मिसेस मदान का वर्तन पाशविकता से एक कदम आगे है। अपने आनंद के लिए वे दूसरों की हत्या भी करने में हिचकिचते नहीं हैं।

लेखका का मत है तेन्दुआ जैसी प्रवृत्ति, विशेषताएँ मनुष्य में ही दिखाई देती हैं।

योरस फेथफुली नाटक के संवाद खंडित व्यक्तित्व के परिचायक है। पात्र सजीव होकर निर्जीव है।

पहला क्लर्क : मेरा है मेरा हाथ है मेरा है

दूसरा क्लर्क : मिस रूपा थी वहाँ ?

तीसरा क्लर्क : हाँ

डिस्पैचर : इल्ली

दूसरा क्लर्क : मिस रूपाने क्या कहा ?

तीसरा क्लर्क : खामोश ।

पहला क्लर्क : मैं नहीं दे सकता इसे ... ये मेरा है मेरा हाथ मेरा हाथ हाथ मेरा है।²⁴

उपर्युक्त संवाद टूटे और असंगत हैं। केदारनाथ सिंह के अनुसार - "अपनी स्वाभाविक गति में अनगढ़ और बेहिसाब लगने वाले संवादों में भी दर्शकों को बाँधने की अद्भुत क्षमता है, वे चेतना, कौतुक एवं प्रतिक्रिया पैदा करते हैं।"²⁵

भाषा शैली की दृष्टि से देखा जाय तो, नाटक के पात्र खंडित है, इसी कारण नाटक की भाषा भी खंडित है। मुद्राराक्षसजी को मुखौटे वाली भाषा से नफरत है। उनका मत है मुखौटे वाली भाषा नये नाटकों के विकास में बाधा निर्माण करती है, बाधा पहुँचाती है। दफ्तरों में बोली जाने वाली यथार्थ भाषा का प्रयोग किया है भले ही यह भाषा खिचड़ीनीरस हो किन्तु यथार्थ है।

ध्वनि प्रकाश योजना पर नजर डाल दी जाय तो दफ्तर के बाहर कर्मचारी नारे लगते हैं उसी समय अफसर कंचन के साथ कार्यालय में संभोग करता है। "इन्कलाब जिंदा बाद । हर जोर जुल्म की टक्कर में हडताल हमारा नारा है।"²⁶ कर्मचारियों के ध्वनि के कारण वह यौन कामना में बाधा पड जाती है, इसी कारण अपना क्रोध चपरासी पर उगल देता है।

अपने कमरे में स्टेनों कंचरूपा के साथ अनैतिकता से पेश आता है, उसी समय तीसरा क्लर्क चाबी की सुराख से अंदर देखता है, लेकिन कोई भी कर्मचारी उसका विरोध नहीं करता। यह दृश्य देखकर तीसरा क्लर्क आफिस में ही आत्महत्या कर लेता है। सभी कर्मचारी वह दृश्य देखते हैं, एक में भी हिम्मत नहीं है, जो अफसर के खिलाफ आवाज उठा सके। क्योंकि वे सभी कंचरूप की तरह मरी हुई लाशें हैं।

कंचरूपा नौकरी की पराधीनता से निराश होकर वह एक दिन मिट्टी का तेल अपने शरीर पर डालकर आग लगाती है और आत्महत्या का प्रयास करती है, इसी कारण उसका चेहरा विदूष होता है। उस समय उसकी मृत्यु पर दफ्तर में शोक सभा बुलाई जाती है। कंचरूपा जीते हुए भी मर गयी है। कंचरूपा अपनी शोकसभा में हिस्सा न ले सकने की वजह जानना चाहती है, जो अफसर उसे कहता है - "मिस रूपा इस दुनिया में बहुत कुछ ऐसा होता है जिसे हम नहीं चाहते फिर भी होता है और उसे एक्सेप्ट करना पड़ता है स्वीकारना पड़ता है। उसे नौकरी का भय दिखाकर उसे कहता है - "तुम मर चुकी हो, मैं तुम्हारे साथ कुछ भी करूँ मरी हुई लडकी विरोध नहीं करती मैं तुम्हारे खिलाफ अनुशासन की कार्यवाही कर सकता हूँ, तुम्हें सस्पेंड कर सकता हूँ²³ तो दूसरी ओर अफसर के चेम्बर में आते ही कंचन रूपा का साडी उतारना। "मैंने सोचा शायद आप मेरे साथ कुछ करेंगे।" यहाँ अफसर और कंचन रूपा के यौन सम्बन्ध एक दूसरे के विरोध में खड़े होते हैं।

अपनी नौकरी की पराधीनता के कारण तीसरा क्लर्क बच्चा पैदा करना अपने आपको खतरा समझता है। क्योंकि अगर यह राज खुल जाता है तो सरकारी नियमों के अनुसार पति-पत्नी एक कार्यालय में काम नहीं कर सकते। इसलिए वह अपनी पत्नी कंचनरूपा के साथ बातें भी नहीं करता। इसलिए वह नसबन्दी करता है। इससे यह स्पष्ट है कि नौकरी की पराधीनता के कारण व्यक्ति को अपना जीवन कभी कभी समाप्त करना पड़ता है। तीसरा क्लर्क अपनी नौकरी की पराधीनता के कारण ही वहीं आत्महत्या करता है।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर यह कहा जा सकता है, आज समाज के लोग जो रक्षक है वह भक्षक बन गये हैं। अपने अधिकार के बल बूते पर अपनी स्वार्थाधता में डूब गये हैं। अपनी खुर्सी को पाने के लिए नेता लोग दूसरों की सहाय्यता से समाज में आतंक फैलाकर गरीब जनता पर अन्याय करते हैं जो एक भक्षक के रूप में सामने आते हैं। मुद्राराक्षसजी ने इन्हीं सुविधाभोगी, स्वार्थाधता में डूबे अधिकारियों की काली करतूतों और भ्रष्ट राजनीतिक वातावरण पर प्रकाश डालने का काम इस नाटक के द्वारा किया है।

डॉ. रीताकुमार के अनुसार - "मुद्राराक्षस का "मरजीवा" नाटक वर्तमान युग का असंगत और दमघोटू परिस्थितियों में उलझे युवा वर्ग की यातना का सजीव किन्तु कटु दृश्य प्रस्तुत करता है। बुद्धिजीवी व्यक्ति अपने आदर्शों और स्वाभिमान की रक्षा के कारण युग की विषमताओं से साहस के साथ कर्म के स्तर पर संघर्ष कराना भी वह नहीं जानता। यही कारण है कि इस संघर्ष में मानसिक स्तर पर क्षत-विक्षत हो वह प्रायः नपुंसक आचरण अपनाता चला जाता है।²⁰

योर्स फेथ फुली :-

मुद्राराक्षस का योर्स फेथफुली नाटक का प्रारंभ इ.स.1974 से आरंभ हुआ²¹ योर्स फेथफुली नाटक केंद्रीय सरकारी कर्मचारियों की हडताल के आधार पर लिखा है। अपने अर्थहीन नाट्यशैली का आद्यंत प्रयोग किया है। सरकारी कार्यालय में चल रहे कुकृत्यों, अधिकारी वर्ग की प्रवंचना साथ ही साथ इसमें सत्ताधारी की अमानवीयता, क्रूरता पर व्यंग्य नजर आता है। प्रस्तुत नाटक में दो वर्ग नजर आते हैं।²² एक में सरकारी अफसर, पुलिस के अधिकारी और दूसरे में क्लर्क चपरासी और डिस्पेंसर हैं। कार्यालय में एक वर्ग दूसरे वर्ग का शोषण करता है।

कंचरूपा नवयुवती है जो कार्यालय में स्टेनो का काम करती है। तीसरा क्लर्क जो कंचरूपा का पति है लेकिन यह राज न खुले जाये इसलिये कंचरूपा के साथ दूरी रखता है। सरकारी कर्मचारियों की हडताल चल रही है। और बाहर सभी कर्मचारी शोर, नारे लगाते हैं। इसीलिए पुलिस गैस छोड़ती है, और उर पर डंडे बरसाती है। इस हडताल के समय अफसर

इस प्रकार मुद्राराक्षसजी के नाटक हिंदी नाटक इतिहास में एक नया मोड़ लाते दिखायी देते हैं। भाषा, शिल्प, वस्तु सभी दृष्टि से एक नयापन इसमें ला रखा गया है। जीवन की विसंगति इनमें प्रतिबिंबित नजर आती है। मुद्राराक्षसजी के साहित्य में नाटक की महत्ता नजर आती है। पत्रकार के कारण रेडियों में काम करने कारण मिले अनुभूवों से रेडियो नाटक, आलोचना, लिखो जैसे उपन्यास, कहानियाँ भी लिखी हैं पर नाटक महत्वपूर्ण है।

संदर्भ :-

1. जयवंत रघुनाथराव जाधव - मुद्राराक्षस के असंगत नाटक एक अनुशीलन, प्र.सं.1995, पृ.53
2. डॉ.गिरीश रस्तोगी - समकालिन हिंदी नाटक की संघर्ष चेतना, प्र.सं.1990, पृ.63
3. जयवंत रघुनाथराव जाधव - मुद्राराक्षस के असंगत नाटक एक अनुशीलन, प्र.सं.1995, पृ.55
4. डॉ.दशरथ ओझा - आज का हिंदी नाटक प्रगति और प्रभाव, प्र.सं.1984, पृ.105
5. डॉ.जयभगवान गुप्ता - "हिंदी रेडियो नाटक" अद्यतन अध्ययन, प्र.सं.1982, पृ.235-252
6. जयवंत रघुनाथराव जाधव - मुद्राराक्षस के असंगत नाटक एक अनुशीलन, प्र.सं.1995, पृ.57
7. डॉ.गिरीश रस्तोगी - समकालिन हिंदी नाटक की संघर्ष चेतना, प्र.सं.1990, पृ.75-76
8. वही, पृ.75
9. डॉ.दशरथ ओझा - आज का हिंदी नाटक प्रगति और प्रभाव, प्र.सं.1984, पृ.106
10. डॉ.गिरीश रस्तोगी - समकालिन हिंदी नाटक की संघर्ष चेतना, प्र.सं.1990, पृ.73
11. डॉ.दशरथ ओझा - आज का हिंदी नाटक प्रगति और प्रभाव, प्र.सं.1984, पृ.106
12. डॉ.स्त्यवती त्रिपाठी - आधुनिक हिंदी नाटकों में प्रयोगधर्मिता, प्र.सं.1991, पृ.174
13. डॉ.गिरीश रस्तोगी - समकालिन हिंदी नाटक की संघर्ष चेतना, प्र.सं.1990, पृ.74
14. मुद्राराक्षस - आला अफसर, प्र.सं.1983, पृ.35
15. वही, पृ.39-40
16. वही, पृ.39-40
17. संपा.नरनारायण राय - असंगत नाटक और रंगमंच (चन्द्र - असंगत हिंदी नाटक और रंगमंच लेख) पृ.132

18. डॉ.सत्यवती त्रिपाठी - आधुनिक हिंदी नाटको में प्रयोगधर्मिता, प्र.सं.1991, पृ.127
19. डॉ.दशरथ ओझा - आज का हिंदी नाटक प्रगति और प्रभाव, प्र.सं.1984, पृ.104
20. डॉ.टी.आर.पाटील - स्मसामायिक हिंदी नाटकों में खंडित व्यक्तित्व अंकन,
प्र.सं.1984, पृ.104
21. जयवंत रघुनाथराव जाधव - मुद्राराक्षस के असंगत नाटक एक अनुशीलन,
प्र.सं.1995, पृ.
22. डॉ.दशरथ ओझा - आज का हिंदी नाटक प्रगति और प्रभाव, प्र.सं.1984, पृ.103
23. मुद्राराक्षस - योर्स फेथफुली - पृ.40
24. मुद्राराक्षस " योर्स फेथफुली, पृ.80
25. डॉ.केदारनाथ सिंह - हिंदी के प्रतीक नाटक और रंगमंच, प्र.सं.1985, पृ.268
26. मुद्राराक्षस - योर्स फेथफुली, पृ.28
27. डॉ.गिरीश रस्तोगी - समकालिन हिंदी नाटक की संघर्ष चेतना, प्र.सं.1990, पृ.65
28. डॉ.दशरथ ओझा - आज का हिंदी नाटक प्रगति और प्रभाव, प्र.सं.1984, पृ.104
29. डॉ.सत्यवती त्रिपाठी - आधुनिक हिंदी नाटकों में प्रयोगधर्मिता, प्र.सं.1991, पृ.129
30. डॉ.दशरथ ओझा - आज का हिंदी नाटक प्रगति और प्रभाव, प्र.सं.1984, पृ.102
31. जयवंत रघुनाथराव जाधव - मुद्राराक्षस के असंगत नाटक एक अनुशीलन,
प्र.सं.1995, पृ.61